के लिए उचित फायनेंस की उपलब्धता रहेगी।

मत्स्यगंधा यानी भीष्म की बि
अग्निपरीक्षा

इंदौर ■ राज न्यूज नेटवर्क

सानेश मंच द्वारा देवी अहिल्या विवि ऑडिटोरियम में 7 अक्टूबर को नाटक संगीत मत्स्यगंधा का मंचन किया गया। प्रो.वसंत कानिटकर द्वारा लिखित नाटक ने इतनी जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की थी कि वर्षों तक थिएटरों में हाउसफुल के बोर्ड टंगते थे। पंडित जितेन्द्र अभिषेकी द्वारा संगीतबध्य नाटक गीत आज भी रसिकों के जुबान पर है। करीब 20 साल बाद गोवा हिंदू एसोसिएशन का कला विभाग फिर से सक्रिय हुआ है। संस्था से जुड़े अमंत पणशीकर ने मत्स्यगंधा नाटक फिर से पेश करने का साहस दिखाया है। पिछले माह 24 सितंबर को इस नाटक का पुनःमंचन दादर के शिवाजी मंदिर में किया गया।

नाटक की कहानी : वसंत कानिटकर ने महाभारत का एक प्रहसन को उठाकर मौलिक शैली में नाटक लिखा है। किस तरह पाराशर का पतन होता है। किस तरह भीष्म अग्निपरिक्षा से गुजरते हैं। अंबा कैसे प्रतिशोध लेती है। किस तरह शांतनु का लालच सामने आता है और नायिका सत्यवती की अबोधिता के कारण किस तरह पेंच आते हैं। यह सब दर्शाया गया है। नाटक की जान इसका संगीत है। मूल नाटक में पाराशर की भूमिका रामदास कामत ने की थी जबकि सत्यवती बनी थी आशा लता। निर्देशक दत्ताराम संगीत का मार्गदर्शन देते दिखते है। नाटक के केन्द्र में मनुष्य की प्रवृत्ति है जो कभी नहीं बदलती। नाटक के असली नायक इसके लेखक वसंत कानिटकर है लेकिन युवा दिग्दर्शिका संपदा कुलकर्णी जोगलेकर की भी प्रशंसा करनी होगी। जिन्होंने नाटक का मूल स्वरुप बरकरार रखकर भी 50 साल पुराने नाटक को नवीनता से मंचित किया। रामदास कामत तो मूर्धन्य रंगकर्मी है ही, लेकिन केतकी चैतन्य, नचिकेत लेले, पूजा सायगांवी, शशि गंगावणे, संजीव ताईल, अमोल कुलकर्णी और राहुल मेहदले ने भी बेहतरीन अभिनय किया है।